संरक्षण के लिए आह्वान

इस वर्ष दिल्ली में गर्मी असामान्य रुप से अलग है । यह लगभग मानसून की तरह लग रही है । अप्रैल के बढते तापमान के मध्य बादल और साप्ताहिक बारिश के बाद शहर आनंद उठा रहा है । हलांकि इस अस्थायी राहत का स्वागत हो चुका है परन्तु यह अल्पकालिक लाभ भी एक बहुत बडी चिन्ता का विषय है । किसी भी मौसम में इस प्रकार का भारी बदलाव पूर्णतः जलवायु परिवर्तन से जुडा हुआ है ।

कई दशकों के लिए पर्यावरण से सम्बन्धित अब खतरनाक आँकडे प्रकाश मे आ रहे हैं। समुद्र स्तर का बढना, प्रजातियों का विलुप्त होना, तापमान में वृद्धि और इस प्रकार यह सूची बढती जा सकती है। हर एक नया आँकडा जो प्रस्तुत किया गया है वह पहले से अधिक निराशाजनक होता है और ये आँकडे पूरे विश्व द्वारा निरन्तर अनुभव की गयी वास्तविकता पर आधारित हैं। जब कभी विश्व ने किसी भी मुद्दे का आज सामना किया तब उस स्थिति से उबरने के लिए उसने उन्नमत हो कर प्रयास किया। सर्मथन एकत्रित करें ताकि हमारा एकजुट प्रयास आगे आने वाले पर्यावरण के विनाश को रोक सके ।

इससे पहले कि हम अपने दिमाग में इस रविवार के औचित्य पर कुछ और विचार करें और ध्यान दें आइये हम कुछ मिनट के लिए मौन रहें । क्या यह सिर्फ पासवान द्वारा कलीसिया में आराधना के दौरान चर्चा करने की एक बात है या एक मसीही होने के नाते यह मेरी चिन्ता का विषय है ? जब कि परमेश्वर के घर में पर्यावरण एक चिन्तन का विषय बन गया है तो ऐसी अवस्था में क्या हम इस प्रकार बिना किसी चिन्ता के स्वतंत्र रुप से जा सकते हैं ? ये पर्यावरण के निरुत्साहित कर देने वाले तथ्य मुझको कोई कार्यवाई करने के लिए बाध्य क्यों करे ? क्या मेरे पास पर्यावरण की देखभाल करने के आह्वान के अलावा कोई दूसरा बड़ा मुद्दा नहीं है जो मेरे ध्यान को अपनी ओर केन्द्रित करे ? यह उचित होगा कि हम एक बार फिर अपने दृष्टिकोण को बाइबल से जाँचें और पर्यावरण संरक्षण करने की बुलाहट को पुनः खोजें।

1. **परमेश्वर हमें सृष्टि का संरक्षण करने के लिए बुलाता है :** एक मसीही होने के नाते हमारे मसीही जीवन और शिष्यता के जीवन में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करना सबसे महत्वपूर्ण है । कई बार हमारे जीवन मे नयी सीख और समझ बहुत से महत्वपूर्ण निर्णय लेने का कारण बन जाती है। ऐसे परिप्रेक्ष में हमारे लिए यह उचित होगा कि हम पर्यावरण पर अपनी समझ को जाँचे और देखें कि यह किस प्रकार हमारे मसीही जीवन की पहचान और विश्वास से जुड़ी है । कई बार हमारे जीवन में ऐसी कोई बड़ी मजबूरी नही होती कि हम किसी कार्य को करने के लिए कोई निर्णय लें, परन्तु सच्चाई यह है कि परमेश्वर हमें बुलाता है और उसकी सन्तान होने के नाते वो हमसे कुछ उम्मीद रखता है।

   अगस्त 2012 की रिपोर्ट के अनुसार प्राकृतिक जगत मे विभिन्न प्रजातियों की संख्या लगभग 87 लाख है। उत्पत्ति 1 हमें संक्षिप्त में परमेश्वर द्वारा इन 87 लाख से भी अधिक प्रजातियों की सृष्टि के

बारे में बताता है, जो या तो मनुष्य की सीमित बुद्धि द्वारा खो गयी है या विलुप्त हो गयी है। हम एक ऐसे परमेश्वर को देखते हैं जो दिलोजान से सृष्टि की रचना करता है और बड़े प्रेम से अपने हाँथों के कार्यो की प्रशंसा करता है । प्रत्येक दिन की रचना के लिए एक सराहना की गयी है। सब कुछ अच्छा है। समर्थन प्रणाली को भी बड़े ध्यान से डिज़ाइन किया गया है । सृष्टि के रचना क्रम के आदेश पर ध्यान दें कि किस प्रकार एक दिन के बाद दूसरे दिन जल, पेड़ पौधे, ऋतुऐं और जीव जन्तु, आदि की सृष्टि हुई जो एक सम्पूर्ण जीवन चक्र को बनाऐ रखने में सहायक है। वहाँ एक आदेश है और उसके समर्थन की व्यवस्था भी है । प्रत्येक चीज़ जो उसने बनाया उसका अपना अलग अस्तित्व, और मूल्य और जन्म देने का वरदान है। इस प्रकार की सुन्दर व्यवस्था में मनुष्य को रखा गया। परमेश्वर के स्वरुप और समानता में रचा जाना ध्यान देने का एक महत्वपूर्ण विषय है, और उसके तुरन्त बाद उसे पृथ्वी पर सम्पूर्ण चीज़ों की देखभाल की जिम्मेदारी सौंपी गयी। मनुष्य की समानता में परमेश्वर की छवि का प्रभार दिया जा रहा है जो काम करने के लिए महत्वपूर्ण था। जिन चीज़ों को परमेश्वर ने बड़े प्यार से रचा उसकी जिम्मेदारी उसने मनुष्य जाति को बड़े भरोसे के साथ दिया। सृष्टि की देखभाल की बुलाहट परमेश्वर की ओर से बाइबल के शुरुआत में ही आती है, और उसने हमें इस कार्य को करने के लिए अपनी छवि और समानता के साथ सुसज्जित भी किया है ।

सृष्टि की देखभाल की बुलाहट परमेश्वर के स्वभाव के अनुरुप है और यह दुनिया की प्रवृत्तियों या वर्तमान के महत्वपूर्ण मुद्दों पर निर्भर नहीं है । जब हम पर्यावरण संरक्षण के लिए कलीसिया का आह्वान कर रहे हैं तो किसी प्रवृत्ति या समय के अनुसार नहीं कर रहे। हमें सृष्टि की देखभाल और अधिक करनी चाहिए, इसलिए नहीं कि पर्यावरण के खतरनाक तथ्य हमरे चेहरे के सामने हैं बल्कि सच्चाई यह है कि परमेश्वर ने हमें उसकी देखभाल करने के लिए बुलाया है।

तो हमने उस आदेश और बुलाहट को कहाँ खो दिया है ? यह सबसे उत्तम समय है जब हम परमेश्वर की सुन्दर सृष्टि की देखभाल करने की अपनी पहली बुलाहट को वापिस प्राप्त कर सकते हैं।

2. **परमेश्वर अपनी सृष्टि की परवाह करता है :** परमेश्वर अपनी सृष्टि की परवाह करता है, यह उत्पत्ति के प्रारम्भिक अध्यायों में ही खत्म नहीं हो जाता । उसकी चिन्ता सम्पूर्ण बाइबल के माध्यम से स्पष्ट होती है। भजनसंहिता 50:11 में वह कहता है पहाड़ों के सब पक्षियों को मैं जानता हूँ , और मैदान पर चलने फिरनेवाले जानवर मेरे ही हैं। वे सब उसी के हैं और वह उन सब को विशेष समझता है। सब कुछ परमेश्वर का है । जितना हम परमेश्वर से सम्बन्धित हैं उसी प्रकार जितनी भी चीजें परमेश्वर ने बनायीं हैं वो सब भी परमेश्वर के होने का दावा कर सकती हैं। वह अपनी प्रत्येक सृष्टि की देखभाल करता है और विशेष रुप से भजनसंहिता की पुस्तक प्रकृति के प्रति परमेश्वर की चिन्ता के संदर्भो से भरा हुआ है । और इतिहास के महत्वपूर्ण अवसरों जैसे उत्पत्ति में जलप्रलय के समय हम देखते हैं कि परमेश्वर ने समस्त सृष्टि की देखभाल करने का विशेष प्रावधान बनाया। यहाँ तक कि अगर पाप हमें परमेश्वर से दूर करता है तब भी वह सम्पूर्ण सृष्टि को नष्ट नही करता ।

नूह के समय में पाप के कारण जो कुछ परमेश्वर ने बनाया उसको नष्ट करना आवश्यक था, परन्तु फिर भी उसने बड़े प्यार से सृष्टि को बनाये रखने के लिए वैकल्पिक प्रावधान बनाया । परमेश्वर ने यह विशेष जिम्मेदारी नूह को दी और उसको निर्देश दिया कि जहाज में उसकी सृष्टि के लिए अलग से कमरा बनाये। यह उसकी रचना की विविधता को संरक्षित करने की इच्छा थी जो नूह को दिये गये आदेश में स्पष्ट होती है । नूह परमेश्वर के निर्देश के प्रति विश्वासयोग्य था, 'नूह ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार किया'। शायद आज भी परमेश्वर दुनिया की जैवविविधता के अन्धाधुन विनाश के संदर्भ में हमें उसकी सृष्टि की देखभाल की ज़िम्मेदारी सौंपना चाहता है। जल प्रलय के बाद फिर परमेश्वर की आशीष आती है। जलप्रलय के बाद की वाचा न केवल मनुष्य जाति के लिए थी बल्कि दुनिया के समस्त जीव के साथ थी (उत्पत्ति 9:8–16) परमेश्वर की वाचा इस बात को सुनिश्चित करने के लिए थी कि भविष्य में उनके अस्तित्व को इस बड़े पैमाने पर खतरा नहीं होगा। इन्द्रधनुष पृथ्वी पर सभी प्रकार के प्राणियों के लिए एक संकेत है। परमेश्वर समस्त प्राणियों से एक वाचा बाँधता है कि वह पृथ्वी को फिर कभी जल से नष्ट नहीं करेगा। यह परमेश्वर की सृष्टि की देखभाल का एक महत्वपूर्ण सबूत है। परमेश्वर की समस्त सृष्टि परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है ।

हलांकि मनुष्य आरम्भ में ही परमेश्वर के अधिकारों से वंचित हो गया, फिर भी परमेश्वर अपरिवर्तनीय अर्थात कभी न बदलने वाला परमेश्वर है। वह लगातार अपनी सृष्टि की और जो कुछ उसने बनाया उसकी देखभाल करता है और चाहता है कि हम भी उसकी बुलाहट का प्रतिउत्तर दें। सम्भवतः नूह की तरह हमें अपने पर्यावरण की सुरक्षा करनी है, जो विनाश के खतरे का सामना कर रही है।

3. सृष्टि की देखभाल करना पड़ोसियों से प्रेम करने का एक हिस्सा है :

आंकड़ों से पता चलता है कि पर्यावरण परिवर्तन का प्रतिकूल प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों पर पड़ा है। हलाँकि, हमेशा कि तरह इन परिवर्तनों का अधिकतम खामियाजा गरीब और पिछड़े लोगों द्वारा ही वहन किया जाता है। जब वे पहले से ही जीवन की सुरक्षाओं और प्रगति में पिछड़े हुए हैं तो ऐसे में पर्यावरण परिवर्तन का प्रभाव उन्हें किसी भी प्रगति से दूर कर देती है। आजीविका, आश्रय, स्वास्थ्य और पर्यावरण और जो कुछ भी बहुमूल्य है उन सब पर पर्यावरण परिवर्तन का प्रभाव होता है।

ऐसे परिप्रेक्ष में एक मसीही की क्या प्रतिक्रिया हो सकती है ? बेशक हम तत्काल राहत के लिए भागते हैं। कुछ स्थायी परिवर्तन लाना कैसा रहेगा जिससे हमारे पर्यावरण की रक्षा होगी और विनाश भी कम होगा । जब हम सामूहिक रुप से मिलकर अपनी जीवन शैली में थोड़ा परिवर्तन लाते हैं तो हम पर्यावरण में अपना थोड़ा योगदान जोड़ते है। देखभाल के लिए परमेश्वर के सभी बच्चों द्वारा ठोस प्रयासों की आवश्यकता है, जो अपने पड़ोसी से प्रेम करते हैं। हमें व्यक्तिगत रुप से निर्णय लेने की आवश्यकता है और दूसरों को अपने प्रयासों द्वारा उत्साहित करने की आवश्यकता है। हम जो सृष्टि की महत्वता को समझते है और उसकी सराहना करते हैं, हमारे लिए आवश्यक है कि हम प्रत्येक संदर्भो में सृष्टि की देखभाल करने की पहल करें और मार्ग का नेतृत्व करें। पृथ्वी हमारे मात्र

अच्छे विचारों से बचायी नहीं जा सकती उसके लिए हमें कार्यवाई की ज़रुरत है। हमारे प्रयास छोटे हो सकते हैं परन्तु फिर भी वो किसी न किसी रुप से हमारे संकट की स्थिति से उबरने के लिए योगदान कर सकते हैं। परमेश्वर की संतान होने के नाते हमारा यह कर्तव्य है कि हम एक जिम्मेदार व्यक्ति की तरह अपने पड़ोसियों की देखभाल करें जो पर्यावरण परिवर्तन के प्रभावों से पीड़ित हैं।

4. **निष्कर्ष :** बहुत सी बातें हैं जो अपनी ओर हमारे ध्यान को आकर्षित करना चाहती हैं, क्या उनके मध्य पर्यावरण का मुद्दा पहला स्थान ले सकता है ? परमेश्वर के लिए हमारी खोज और सीमित ध्यान केन्द्रित करके हमारे विचारों को उजागर करने में पर्यावरण की चिन्ताओं को पूरी तरह से उपेक्षित किया गया है । बड़े पैमाने पर हम एक ऐसे परिप्रेक्ष में जीवन यापन कर रहे हैं जहाँ पर्यावरण के मुद्दे को शिष्यता की बुलाहट के दायरे से बाहर रखा जाता है । कलीसिया ने पर्यावरण की देखभाल के लिए या उससे सम्बन्धित मुद्दों के लिए न बोला न लोगों को प्रेरित किया है। हम बाइबल के कुछ मुख्य पदों को ही सम्बोधित करते हैं और उस प्रक्रिया में हम बाइबल की दूसरी बुलाहट को पूर्णतः उपेक्षित कर देते हैं। हम बाइबल के उन पदों पर ध्यान देने में असफल रहे हैं जो पर्यावरण की देखभाल करने के लिए हमें बुलाती हैं। यही समय है जब हमें बाइबल के वचन द्वारा अपनी समझ को नये सिरे से पुनः प्राप्त करना है और पर्यावरण की देखभाल करने के लिए परमेश्वर की बुलाहट को पुनः खोजना है।

परमेश्वर के स्वरुप मे रचे गये और उसके गुणों से सम्पन्न लोग होने के नाते हम उसकी सृष्टि की देखभाल करने के लिए बुलाए गये हैं। उसी नम्रता और प्यार से सृष्टि की देखभाल करें जैसे हम अपने हाथों के द्वारा बनायी गयी चीज़ों की देखभाल करते हैं। आइये परमेश्वर की देखभाल करने के आदेश पर वापस जायें। सृष्टि की देखभाल करने के लिए हमारे ऊपर बहुत से अन्य दबाव हो सकते हैं परन्तु सच्चाई यह है कि इसके अलावा और क्या बड़ा दबाव हो सकता है कि हमारे सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने हमें सृष्टि की देखभाल करने के लिए बुलाया है।